ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-6 No. 10 June 2020

भारत रत्न पं. रविशंकर जी द्वारा रचित नवीन राग- मोहनकौ (राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को समर्पित)

Author- **Pragati Dwivedi, (Research Scholar)**

Co- author - **Dr. Neetu Gupta (Research Guide)**

Affiliation – Music Department, Dayalbagh Educational Institute, Agra

Postal address- 9 chandra nagar, Lalbangla, Kanpur 208007

शोध प्रपत्र साररू- कला का उद्देश्य, जो रंजकता है उसके विकास के लिए कलाकार विभिन्न माध्यमों का उपयोग करता है। इस प्रकार कभी – कभी रियाज के दौरान भी, कुछ स्वरों के विविध प्रयोग से नव राग कल्पना साकार हो जाती है। ऐसे ही प्रयोगकर्ताओं द्वारा कला अपने चरमोत्कर्ष को प्राप्त करती है।

ऐसे संगीतकार संगीत जगत में उनकी रचना द्वारा सदैव अमर रहते हैं। किंतु कुछ कलाकार ऐसी रचना करते हैं जिसके कारण उन्हें संगीत जगत के अवसरों के अतिरिक्त, समाज के अन्य लोगों द्वारा भी याद किया जाता है। इस संदर्भ में शोधकत्री द्वारा सितार नवाज पंडित रविशंकर जी का नाम यहां उल्लेखनीय है। पं. रविशंकर जी, जो विभिन्न रागों तथा तालों के सृजनकर्ता भी हैं और शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त उन्हें सुगम संगीत, फिल्म संगीत तथा पाश्चात्य संगीत के लिए भी जाने जाते हैं, चूंकि उनके द्वारा रचित अनेक रागों में से एक महत्वपूर्ण राग मोहनकौंस भी है, जिसके लिए वे सदा स्मरणीय रहेंगे। अतः यहां शोधकत्री द्वारा उसका परिचय दिया जा रहा है।

प्रस्तावनारू- भारतीय संगीत प्रणाली जहां पारंपरिक है, नियमों और बंधनों में दृढ़ कही जाने वाली है, तो वहीं यह पद्धति कलाकारों को स्वच्छंदता प्रदान कर उन्हें स्वयं की उपज एवं मनोधर्म का पालन करने की आजादी भी प्रदान करती है।

नव राग निर्मिति भी इसी उपज और मनोधर्म को प्रदर्शित करने का एक माध्यम है। समाज में कई ऐसे अवसर बन पड़ते हैं जिनके अनुकूल कलाकार अपनी रचनात्मक स्वतंत्रता और कौशलता का परिचय देता है और समयानुसार अपनी रचना को गौरव प्राप्त करवाने का समुचित प्रयास भी करता है।

नव राग निर्माणरू- यंू तो भारतीय संगीत पद्धति में रागों की संख्या अपरिमित है तथापि संगीतकारों को नए राग की परिकल्पना गढ़ते प्रायः देखा गया है। इसके अतिरिक्त विविध अवसरों पर कलाकारों ने अपने गुरु, अपने संबंधी, अथवा किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति को, स्वनिर्मित राग समर्पित भी किये गये है। कुछ माह पूर्व ही उस्ताद अमजद अली खां साहब द्वारा, श्री अमिताभ बच्चन के 77वें जन्मदिवस पर उनके पिता स्व. श्री हरिवंशराय बच्चन जी को एक राग ष्हरिवंश-कल्याणष् समर्पित किया गया।

 Copyright © 2020 Authors

गांधी जी को समर्पित कतिपय रागरू–विशिष्ट रूप से, महात्मा गांधी एक ऐसे व्यक्ति हैं, जिन्होंने पिछली शताब्दी में कई दिग्गज संगीतकारों को अपने नाम से राग बनाने की प्रेरणा दी है। यह असामान्य श्रद्धंांजलि हमारी शास्त्रीय संगीत परंपरा में निहित समृद्ध रचनात्मकता की गवाही है।

महात्मा गांधी को समर्पित इस श्रद्धांजलि की श्रंखला में बहुत से नाम परिलक्षित होते हैं, जिनकी संक्षिप्त जानकारी इस प्रकार है–

सन् 1969 में गांधी जी के निधन के दो दशक बाद एक राग बनाया गया और इसके रचयिता थे पं. कुमार गंधर्व । उन्होंने 30 जनवरी को इस राग को गाया भी था। इस राग को उन्होंने ष्गांधी मल्हार ष् नाम दिया।

बापू पर रची जाने वाली एक अन्य रचना के रचनाकार, कोई और नहीं बल्कि विपुल रचनाकार उस्ताद अमजद अली खान थे, जिन्होंने अपने बीस और तीस के शुरूआती दशक में पहले से ही अधिकांश हस्ताक्षरित रचनाएं रची थीं, जो अब भी उनके साथ जुड़ी हुई हैं। 27 वर्ष पहले बापू के 125 वे जन्म वर्ष के लिए बनाई गई उनकी रचना राग ष्बापूकौंसष् है।

महात्मा गांधी को समर्पित अंतिम रचना के रचयिता एक और महान संगीतकार, संगीतकलानिधि चित्रवीणा वादक रविकिरण थे, जिन्होंने 1990 के दशक में महात्मा गांधी को समर्पित राग ष्मोहिनीष् बनाया था।

ष्भारतरत्नष् पं. रविशंकर जी द्वारा रचित राग– ष्मोहनकौंसष्– उपयुकर््त वर्णित सभी रचनाकारों में से सर्वप्रथम ष्राष्ट्रपिताष् महात्मा गांधी को राग रचकर समर्पित करने वाले रचनाकार, भारत रत्न पं. रविशंकर जी थे। यह राग पं जी द्वारा अनायास 1948 में ष्बापूष् की मृत्यु की सूचना पर बनाया गया था।

पं. रविशंकर जी को आॅल इंडिया रेडियो द्वारा गांधी जी को समर्पित एक टुकड़ा बजाने के लिए कहा गया था, और मौके पर उन्होंने उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत प्रणाली के 6 मुख्य एवं अर्वाचीन रागों में से एक बहुत ही सुंदर राग मालकौंस को चुना।

सन् 1948 फरवरी, में भारत सरकार के उपक्रम आकाशवाणी के आग्रह पर पं. रविशंकर जी ने महात्मा गांधी की श्रद्धंांजलि स्वरूप यह राग बनाया। उस समय आकाशवाणी पर तबल¨ के बिना गायन–वादन ह¨ रहा था। पं0 रविशंकर उनकी याद में कुछ वादन कर ही रहे थ¨ तभी उनके मस्तिष्क में कुछ स्वर प्रकट हुए उन्ह¨ंने गाँधी जी के नाम के अनुरूप गाँधी में से गंधार, निषाद एवं ध्©वत लेकर इन्हीं तीन स्वर¨ं में निषाद व ध्©वत क¨क¨मल कर दिया व गंधार क¨ शुद्ध कर दिया। इसका स्वरूप राग मालकौंस से मिलता है। कोमल गंधार के स्थान पर शुद्ध गंधार के प्रयोग से इस राग की निष्पत्ति होती है। इसमें रिषभ पंचम वर्ज्य हैं। इसका वादी स्वर मध्यम है और संवादी स्वर षडज है, जाति वक्र औड़व है। गायन समय रात्रि का द्वितीय प्रहर है। पं. रविशंकर जी ने इस राग को क©ंस अंग के अन्तर्गत रखा है। राग विस्तार के आधार पर इस राग में पंचम का प्रय¨ग न ह¨ने से अधिकतर मालक©ंस का आभास ह¨ता है, किन्तु रे के विशिष्ट एवं अति अल्प अवर¨हात्मक प्रयोग से तथा शुद्ध गंधार के प्रय¨ग से यह राग मालक©ंस से बिल्कुल भिन्न ह¨ जाता है।

 Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-6 No. 10 June 2020

आरोह – स ग म ध नि सं

अवरोह – सं नि ध म ग, म रे ग म ग स

पं. रविशंकर जी के वरिष्ठ शिष्य पं. शुभेन्द्र राव ने वर्ष 2018 में गांधी जी को समर्पित दो दिवसीय शास्त्रीय संगीत समारोह में समापन समारोह के रूप में राग मोहनकौंस प्रस्तुत भी किया था। यह गांधी जी की 150वीं जयंती वर्ष के 6 दिवसीय उत्सव के भाग के रूप में, प्ळछब्। द्वारा आयोजित किया गया था।
यहां राग मोहनकौंस की एक बंदिश प्रस्तुत है, यह रूपक ताल में निबद्ध है और पंडित रविशंकर जी द्वारा बजाई गई है –

स्थाई

1 2 3 4 5 6 7

म म म स मम ग मनि

ध ध म ग गम रे ग

म म म ग मग स नि

ध़ ध़ नि स गग म नि

ध ध म ग मम रे ग

म म म ग सस ग म

 Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-6 No. 10 June 2020

नि ध म ग मम रे ग

ग् 2 3

अंतरा

1 2 3 4 5 6 7

म म म ग मम ध नि

सां सां सां ध निनि सां गम

सां नि ध ग मम ध नि

सां सां सां ध निनि संा नि

ध ध म ग मम रे ग

म म म – – –

ग् 2 3

 Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-6 No. 10 June 2020

संदर्भ ग्रंथ सूची

ऽ स्वतंत्र भारत के नवनिर्मित कतिपय रागों का विश्लेषणात्मक अध्ययन शोधकत्री – मालती श्रीवास्तव, डी. ई. आई. 1992 यशोध प्रबंधद्ध

ऽ भारतीय संगीत में नव राग निर्मिति की संभावनाएं, लेखक प्रा. विजय आळसी संगीत कला विहार, अक्टूबर 2011,

ऽ पं. रविशंकर द्वारा नव निर्मित रागों का शास्त्रीय विवरण, लेखक डाॅ लक्ष्मीनारायण गर्ग, संगीत जुलाई 2005

ऽ त्ममितमदबम. ीजजचेरूध्ध्लवनजनण्इमध्51रञ्ञंेअज्ञड0

 Copyright © 2020 Authors